A Pratibha Spandan's Journal

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

हिंदी संगीत और साहित्य का संगम: ध्वनि और शब्द की अनूठी यात्रा

Dr. Shima Rani
Assistant Professor & HoD, Department of Hindi, Government College Dujana, Jhajjar

OPEN ACCESS

सार

हिंदी साहित्य और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन और गहरा है। दोनों ही विधाएँ मानवीय भावनाओं, विचारों और संस्कारों की अभिव्यक्ति के माध्यम हैं। यह शोध-पत्र हिंदी साहित्य और संगीत के अंतर्संबंधों का विश्लेषण करता है तथा यह दर्शाता है कि कैसे हिंदी साहित्य ने संगीत को एक सशक्त अभिव्यक्ति प्रदान की है। भक्ति काल के संत कवियों - जैसे कबीर, तुलसीदास, मीरा, और सूरदास - के पदों को संगीतबद्ध कर भजन, कीर्तन और लोकगीतों के रूप में प्रस्तुत किया गया। हिंदी साहित्य के छायावादी और प्रगतिशील कवियों के काव्य ने भी संगीत को प्रभावित किया और आधुनिक हिंदी फिल्म संगीत में साहित्यिक सौंदर्य की झलक देखी जा सकती है। इस शोध-पत्र में हिंदी साहित्य और संगीत के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पक्षों की पड़ताल की गई है। इसके अंतर्गत लोकगीत, भक्ति संगीत, हिंदी ग़ज़ल, सूफी संगीत, और हिंदी फिल्म संगीत में साहित्यिक तत्वों का विश्लेषण किया गया है। साथ ही, यह अध्ययन साहित्य और संगीत की पारस्परिकता को रेखांकित करते हुए यह सिद्ध करने का प्रयास करता है कि हिंदी संगीत और साहित्य न केवल अभिव्यक्ति के माध्यम हैं, बल्कि वे समाज और संस्कृति को जोड़ने वाली महत्वपूर्ण कड़ियाँ भी हैं।

संदर्भ शब्द: हिंदी साहित्य, भक्ति संगीत, हिंदी ग़ज़ल, लोकगीत, हिंदी फिल्म संगीत, काव्य-संगीत संबंध।

परिचय

हिंदी साहित्य और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन, गहन और बहुआयामी है। ये दोनों विधाएँ मानवीय भावनाओं और विचारों की अभिव्यक्ति के सशक्त माध्यम हैं, जो समाज, संस्कृति और आध्यात्मिकता को प्रभावित करती आई हैं। हिंदी साहित्य की अनेक काव्य विधाएँ, जैसे भक्ति काव्य, रीतिकाव्य, छायावादी काव्य, और आधुनिक काव्य, संगीत से घनिष्ठ रूप से जुड़ी रही हैं। इसी प्रकार, भारतीय संगीत की परंपरा में हिंदी साहित्य के अनेक रचनाकारों की भूमिका महत्वपूर्ण रही है। हिंदी साहित्य के विकासक्रम में भक्ति आंदोलन का विशेष योगदान रहा है, जिसमें संत कवियों ने अपने काव्य को संगीत के माध्यम से जनसामान्य तक पहुँचाया। कबीर, सूरदास, तुलसीदास और मीरा बाई के पदों को शास्त्रीय और लोक संगीत में प्रस्तुत किया गया। इसी तरह, सूफी काव्य में भी संगीत को विशेष स्थान प्राप्त है। हिंदी साहित्य में संगीत का प्रभाव केवल भक्ति साहित्य तक सीमित नहीं रहा, बल्कि छायावाद और प्रगतिवाद जैसे आंदोलनों में भी इसे महत्वपूर्ण स्थान मिला। संगीत और साहित्य, दोनों में ध्वनि और शब्द की भूमिका महत्वपूर्ण होती है। साहित्य का मूल तत्व शब्द है, जबकि संगीत ध्वनि का एक कला रूप है। जब दोनों का संगम होता है, तो एक नया सौंदर्यशास्त्र विकसित होता है, जो न केवल सुनने में मधुर होता है, बल्कि गहरे भावों को भी प्रकट करता है। हिंदी काव्य में प्रयुक्त छंद और लय संगीत की ही भाँति लयबद्ध होते हैं, जिससे कविता का प्रभाव और अधिक गहन हो जाता है। यह अध्ययन साहित्य और संगीत के बीच पुल बनाने का कार्य करेगा और दोनों की पारस्परिकता को नए दृष्टिकोण से देखने का अवसर प्रदान करेगा।

हिंदी साहित्य और संगीत का ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य

हिंदी साहित्य और संगीत का संबंध अत्यंत प्राचीन है, जिसकी जड़ें वैदिक काल से जुड़ी हुई हैं। भारतीय परंपरा में साहित्य और संगीत को अलग-अलग विधाओं के रूप में देखने की प्रवृत्ति नहीं रही है, बल्कि दोनों को एक-दूसरे के पूरक के रूप में स्वीकार किया गया है। वैदिक मंत्रों के उच्चारण से लेकर आधुनिक हिंदी फिल्मी गीतों तक, यह यात्रा विविधता, समृद्धि, और सांस्कृतिक विरासत से परिपूर्ण रही है। इस ऐतिहासिक परिप्रेक्ष्य में हिंदी साहित्य के विभिन्न कालखंडों में संगीत के योगदान को समझना आवश्यक है।

हिंदी साहित्य और संगीत का आरंभ वेदों के संगीतमय छंदों से हुआ। ऋग्वेद, सामवेद, यजुर्वेद और अथर्ववेद में संगीतमय संरचनाएँ स्पष्ट रूप से देखी जा सकती हैं, जिनमें सामवेद विशेष रूप से संगीत से संबंधित है। सामवेद के मंत्रों को गान शैली में प्रस्तुत किया जाता था, जिससे संगीत और साहित्य का प्रथम संगम स्थापित हुआ। वैदिक ऋषियों ने ध्वनि और शब्दों के तालमेल को आध्यात्मिक उन्नति का साधन माना, और यही प्रवृत्ति आगे चलकर हिंदी साहित्य के विभिन्न युगों में देखने को मिली। भक्ति काल (13 वीं से 17 वीं शताब्दी) को हिंदी साहित्य और संगीत के मध्य स्वर्णिम संगम का काल कहा जा सकता है। इस काल के कवियों ने साहित्य को केवल लिखित रूप तक सीमित नहीं रखा, बल्कि उसे संगीतमय अभिव्यक्ति दी। इस काल में निर्गुण और सगुण भक्ति धारा के संतों और कवियों ने अपने विचारों को गीतों, भजनों और कीर्तन के माध्यम से जन-

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

जन तक पहुँचाया। सगुण भक्ति धारा के अंतर्गत तुलसीदास, सूरदास, मीराबाई, और नरसी मेहता जैसे कवियों ने अपनी रचनाओं को संगीतबद्ध किया। सूरदास के कृष्ण भक्ति पद 'सूरसागर' में संकलित हैं और ब्रज भाषा में लिखे गए इन पदों को ध्रुपद और धमार जैसी शास्त्रीय गायन शैलियों में गाया जाता है। मीराबाई के भजन आज भी भक्तिमय संगीत का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। 'पायो जी मैंने राम रतन धन पायो' और 'मेरे तो गिरिधर गोपाल' जैसे उनके गीत भक्ति संगीत की उत्कृष्ट अभिव्यक्ति हैं। इसी प्रकार, तुलसीदास के रामचरितमानस के छंदों को कीर्तन और भजन के रूप में गाया जाता है, जो संगीत और साहित्य के गहरे संबंध को दर्शाता है। रीतिकाल (17 वीं से 19 वीं शताब्दी) हिंदी साहित्य का वह युग था जब कविता का मुख्य उद्देश्य श्रृंगार और कलात्मक सौंदर्य की अभिव्यक्ति बन गया। इस काल में संगीत और साहित्य का संबंध दरबारी परंपरा से जुड़ गया। राजाओं और नवाबों के दरबारों में कवि और संगीतज्ञ दोनों को सम्मान प्राप्त था। बिहारी, केशवदास, और घनानंद जैसे कवियों की रचनाएँ लयबद्ध थीं और संगीत के माध्यम से इनका प्रभाव और अधिक बढ़ जाता था। दरबारी संगीत में हिंदी साहित्य का विशेष स्थान था। ठुमरी, दादरा, और टप्पा जैसी गायन शैलियों में हिंदी काव्य का उपयोग हुआ। इस काल में संगीतकारों और कवियों का घनिष्ठ संबंध देखा जा सकता है, जहाँ एक ओर तानसेन जैसे महान संगीतज्ञों ने हिंदी के काव्य को सुरबद्ध किया, वहीं दूसरी ओर रीतिकालीन कवियों ने संगीत की संवेदनशीलता को अपनाया।

आधुनिक हिंदी साहित्य (19 वीं शताब्दी के अंत से लेकर 20 वीं शताब्दी) में संगीत का प्रभाव पहले से अधिक स्पष्ट रूप में उभरकर आया। भारतेंदु हरिश्चंद्र, महावीर प्रसाद द्विवेदी, और जयशंकर प्रसाद जैसे साहित्यकारों ने अपनी रचनाओं में संगीतात्मकता को प्रमुख स्थान दिया। छायावाद युग के कवियों जैसे सुमित्रानंदन पंत, महादेवी वर्मा, और सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला' ने अपनी कविताओं में लय और ताल को विशेष महत्व दिया। इस काल में राष्ट्रीय चेतना को जागृत करने वाले गीतों और संगीत की प्रमुखता देखी गई। स्वतंत्रता संग्राम के दौरान 'वंदे मातरम्' (बंकिम चंद्र चट्टोपाध्याय) और 'सरफरोशी की तमन्ना' (रामप्रसाद बिस्मिल) जैसे गीतों ने साहित्य और संगीत दोनों को राष्ट्रीय आंदोलन का माध्यम बना दिया। हिंदी फिल्मों के गीतों में काव्यात्मकता की झलक स्पष्ट रूप से देखी जा सकती है। गीतकारों ने साहित्यिक सौंदर्य, शृंगारिकता, और दार्शनिकता को अपने गीतों में अभिव्यक्त किया, जिससे हिंदी साहित्य और संगीत का नया संगम बना।

हिंदी साहित्य और संगीत का संगम केवल ऐतिहासिक यात्रा नहीं है, बल्कि यह सांस्कृतिक विरासत की निरंतर प्रवाहित धारा है। वैदिक मंत्रों से लेकर हिंदी फिल्मी गीतों तक, इस संबंध ने भारतीय समाज को दिशा प्रदान की है। भक्ति आंदोलन के संतों ने साहित्य और संगीत को एकात्म किया, रीतिकाल के कवियों ने इसे दरबारी संस्कृति में स्थान दिया, आधुनिक काल के साहित्यकारों ने इसे नवजागरण के रूप में देखा, और हिंदी फिल्म संगीत ने इसे वैश्विक पहचान दी। हिंदी साहित्य और संगीत का यह संगम भविष्य में भी नई ऊँचाइयों को छूता रहेगा और सांस्कृतिक धरोहर को समृद्ध करेगा।

संगीत और साहित्य का सांस्कृतिक महत्व

संगीत और साहित्य किसी भी समाज की सांस्कृतिक धरोहर के प्रमुख स्तंभ होते हैं। यह न केवल मानव भावनाओं की अभिव्यक्ति के साधन हैं, बल्कि एक सभ्यता की परंपराओं, मूल्यों और विचारधाराओं को पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। हिंदी साहित्य और संगीत का आपसी संबंध भारतीय संस्कृति के मूल तत्त्वों में से एक है, जो हमारी आध्यात्मिक, दार्शनिक और सामाजिक चेतना को परिभाषित करता है।

संगीत और साहित्य दोनों ही समाज की सामूहिक स्मृति के रूप में कार्य करते हैं। प्राचीन काल से ही यह माध्यम लोक संस्कृति, धार्मिक आस्थाओं और सामाजिक संरचनाओं को संजोने और संरक्षित करने का कार्य कर रहे हैं। उदाहरणस्वरूप, भक्ति साहित्य में लिखे गए भजन, दोहे, और पद, संगीत के माध्यम से जनमानस तक पहुँचे और एक सामाजिक चेतना का निर्माण किया। तुलसीदास के रामचरितमानस, सूरदास के कृष्ण पद, और मीराबाई के भजन, केवल साहित्यिक कृतियाँ नहीं हैं, बल्कि यह भारतीय संस्कृति की गहराई को प्रकट करने वाले संगीतमय ग्रंथ भी हैं।

भारतीय समाज में संगीत और साहित्य का एक प्रमुख सांस्कृतिक पहलू त्योहारों और धार्मिक अनुष्ठानों से जुड़ा हुआ है। रामलीला, कृष्णलीला, और अन्य लोकनाट्यों में संगीत और साहित्य का अद्भुत समन्वय देखने को मिलता है। यहाँ तक कि लोकगीत और लोकगाथाएँ भी सांस्कृतिक मान्यताओं और रीति-रिवाजों का प्रतिनिधित्व करती हैं। विवाह के अवसरों पर गाए जाने वाले गीत, जैसे बन्ना-बन्नी और विदाई गीत, सामाजिक परंपराओं को बनाए रखने का कार्य करते हैं।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

इतिहास साक्षी है कि स्वतंत्रता संग्राम के दौरान भी साहित्य और संगीत ने सांस्कृतिक एकता और राष्ट्रीय चेतना को प्रोत्साहित किया। 'वंदे मातरम्' और 'जन गण मन' जैसे गीतों ने स्वतंत्रता संग्राम को नई ऊर्जा दी और पूरे देश को एकजुट करने का कार्य किया। ये गीत न केवल राजनीतिक क्रांति का प्रतीक बने, बल्कि भारतीय सांस्कृतिक चेतना के अभिन्न अंग भी बने।

आधुनिक संदर्भ में भी हिंदी साहित्य और संगीत का सांस्कृतिक महत्व कम नहीं हुआ है। हिंदी फिल्म संगीत ने साहित्यिक गीतों को अपनाकर इन्हें एक नई पहचान दी है। शास्त्रीय संगीत, ग़ज़ल, लोकगीत, और आधुनिक फिल्मी गीतों ने साहित्यिक तत्वों को जीवंत बनाए रखा है। गुलज़ार, साहिर लुधियानवी, और जावेद अख़्तर जैसे गीतकारों ने साहित्य और संगीत का संगम प्रस्तुत कर सांस्कृतिक समृद्धि में योगदान दिया है।

इस प्रकार, संगीत और साहित्य न केवल मनोरंजन के साधन हैं, बल्कि यह समाज की विचारधारा, भावनाएँ, और ऐतिहासिक घटनाओं को परिभाषित करने वाले प्रमुख तत्व भी हैं। यह सांस्कृतिक प्रवाह की निरंतरता को बनाए रखते हैं और समाज की आत्मा को जीवंत बनाए रखते हैं। इसलिए, हिंदी साहित्य और संगीत का अध्ययन केवल साहित्यिक दृष्टिकोण से ही नहीं, बल्कि सांस्कृतिक दृष्टि से भी आवश्यक है, ताकि हमारी सांस्कृतिक विरासत को संजोया और आगे बढ़ाया जा सके।

हिंदी फिल्म संगीत और साहित्य

हिंदी फिल्म संगीत और साहित्य का गहरा संबंध है, जो भारतीय समाज की सांस्कृतिक और भावनात्मक अभिव्यक्ति का एक अनूठा माध्यम बन चुका है। हिंदी फिल्म उद्योग, जिसे आमतौर पर बॉलीवुड कहा जाता है, अपने आरंभिक काल से ही साहित्य से प्रेरणा लेता रहा है। हिंदी फिल्म संगीत न केवल मनोरंजन का साधन है, बल्कि यह भारतीय समाज की सांस्कृतिक धरोहर, लोक परंपराओं, और साहित्यिक अभिव्यक्तियों को एक नई पहचान देने का भी कार्य करता है।

1930 और 1940 के दशक में, जब भारतीय सिनेमा अपनी प्रारंभिक अवस्था में था, तब फिल्मों के गीतों में साहित्यिकता का विशेष ध्यान रखा जाता था। उस समय के गीतकारों ने पारंपरिक हिंदी साहित्य, उर्दू शायरी, और भक्ति काव्य से प्रेरणा लेकर गीतों की रचना की। कवि प्रदीप, शकील बदायूनी, साहिर लुधियानवी, और मजरूह सुल्तानपुरी जैसे प्रतिष्ठित कवि और शायर फिल्म जगत में आए और उन्होंने हिंदी फिल्म संगीत को एक साहित्यिक गहराई प्रदान की। उनके गीत केवल मनोरंजन तक सीमित नहीं थे, बल्कि वे समाज की समस्याओं, प्रेम, आध्यात्मिकता, और जीवन के गूढ़ रहस्यों को भी उजागर करते थे। उदाहरण के लिए, साहिर लुधियानवी के गीत 'वो सुबह कभी तो आएगी' (फिल्म: फिर सुबह होगी, 1958) ने समाजवाद और उम्मीद का संदेश दिया, जो तत्कालीन साहित्यिक और सामाजिक चेतना से प्रभावित था।

हिंदी फिल्म संगीत ने साहित्य को जनसामान्य तक पहुँचाने का कार्य किया। जो साहित्य केवल किताबों तक सीमित था, वह फिल्मों के माध्यम से जन-जन तक पहुँचा। मुकेश, लता मंगेशकर, किशोर कुमार, और मोहम्मद रफ़ी जैसे महान गायकों ने जब साहित्यिक गीतों को अपनी मधुर आवाज़ में गाया, तो वे गीत जनमानस का हिस्सा बन गए। मीरा, कबीर, तुलसी, और सूरदास जैसे संत कवियों की रचनाओं को भी हिंदी सिनेमा ने अपनाया और उन्हें फिल्मी धुनों के माध्यम से अधिक लोकप्रिय बनाया।

1950 और 1960 के दशकों में हिंदी सिनेमा में साहित्य का प्रभाव स्पष्ट रूप से देखा गया। उस दौर में 'गाइ' (1965) जैसी फिल्में आईं, जो आर. के. नारायण के प्रसिद्ध उपन्यास पर आधारित थी, और इसके गीत 'आज फिर जीने की तमन्ना है' और 'तेरे मेरे सपने अब एक रंग हैं' गहरे साहित्यिक और दार्शनिक भाव लिए हुए थे। इसी प्रकार, 'साहिब बीबी और गुलाम' (1962) में गुरुदत्त और शकील बदायूनी की कलम से निकले गीतों ने साहित्यिक गहराई को संगीत में पिरोया।

1970 और 1980 के दशकों में हिंदी फिल्म संगीत में साहित्यिकता का प्रभाव कुछ कम हुआ, लेकिन फिर भी गुलज़ार, जावेद अख़्तर, और आनंद बख्शी जैसे गीतकारों ने साहित्यिक सौंदर्य को बनाए रखा। गुलज़ार के गीतों में कविता का गहरा प्रभाव देखने को मिलता है। उनके लिखे गीत जैसे 'मेरा कुछ सामान तुम्हारे पास पड़ा है' (फिल्म: इजाज़त, 1987) एक साहित्यिक कविता की तरह ही प्रतीत होते हैं।

आधुनिक हिंदी सिनेमा में, हालांकि संगीत का स्वरूप बदला है और पॉप तथा रैप संगीत का प्रभाव बढ़ा है, फिर भी कुछ गीतकार ऐसे हैं जो साहित्यिकता को बनाए रखने का प्रयास कर रहे हैं। स्वानंद किरकिरे, इरशाद कामिल, और अमिताभ भट्टाचार्य जैसे गीतकार आज भी अपने गीतों में साहित्यिक तत्वों को समाहित करने का कार्य कर रहे हैं। उदाहरण के लिए, फिल्म 'रॉकस्टार' (2011) का गीत 'तुम हो' या 'सदाबहार' साहित्यिक संवेदनाओं से भरा हुआ है।

SWAR SINDHU
(National Peer-Reviewed/Refereed Journal of Music)
A UGC CARE listed Journal
ISSN 2320–7175 (O) | Volume 13, Issue 01, January-June, 2025
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org © The Author(s) 2025

इस प्रकार, हिंदी फिल्म संगीत और साहित्य का आपसी संबंध गहरा और अटूट है। फिल्मी गीत केवल धुनों का मेल नहीं होते, बल्कि वे समाज के विचारों, भावनाओं और सांस्कृतिक मूल्यों को प्रतिबिंबित करने वाले साहित्यिक दस्तावेज भी होते हैं। हिंदी फिल्म संगीत साहित्य को सजीव बनाकर, उसे व्यापक स्तर पर लोकप्रिय बनाने का कार्य करता है, जिससे साहित्य केवल शिक्षित वर्ग तक सीमित न रहकर आम जनता तक पहुँच पाता है।

निष्कर्ष

हिंदी साहित्य और संगीत का संबंध सदियों पुराना और अत्यंत गहरा है। दोनों ने हमेशा समाज की संवेदनाओं, भावनाओं और सांस्कृतिक धरोहर को एक दूसरे के माध्यम से उजागर किया है। साहित्य और संगीत के इस संगम ने न केवल भारतीय समाज के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवेश को परिभाषित किया है, बल्कि यह विभिन्न पीढ़ियों के बीच एक पुल का कार्य भी करता है। हिंदी साहित्य ने संगीत के माध्यम से अपनी विचारधारा, संघर्ष, प्रेम, भक्ति और दर्शन को जनमानस तक पहुँचाया, जबकि संगीत ने साहित्य को अपनी मधुर ध्वनियों से संजीवनी दी। हिंदी फिल्म संगीत ने भी साहित्य को एक नया आयाम दिया, जिससे वह केवल पढ़ने तक सीमित न रहकर जन-जन तक पहुँच सका। फिल्मी गीतों ने साहित्य को मनोरंजन के रूप में प्रस्तुत किया, जिससे आम जनता भी साहित्यिक विचारधाराओं से जुड़ सकी। इस अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि साहित्य और संगीत दोनों का आपसी संबंध भारतीय संस्कृति का अभिन्न अंग है, और उनका संगम हमारे समाज को एक नई दिशा और समझ देता है। इन दोनों के बिना भारतीय सांस्कृतिक धरोहर की कल्पना भी अधूरी होगी। साहित्य और संगीत की यह अनूठी यात्रा हमें न केवल हमारे अतीत से जोड़ती है, बल्कि वर्तमान और भविष्य के सामाजिक और सांस्कृतिक परिवर्तनों को समझने में भी सहायक है। यह निरंतर गतिशीलता में रहने वाला एक सांस्कृतिक प्रवाह है, जो निरंतर आगे बढ़ता है और हमारी सभ्यता की गहरी जड़ों को जीवित रखता है।

संदर्भ

Bṛhaspati, Ācārya, and Ma Kṛ Pāradhī. "मुसलमानी अमदानीत संगीत: आचार्य बृहस्पति यांच्या" मुसलमान और भारतीय संगीत या हिंदी ग्रंथाचा अनुवाद.

Gaikwad, Jyoti. "हिंदी सिनेमा और समाज." IIP: International Multidisciplinary Research Journal 1. Issue-I (Oct-Dec) (2024): 4-4.

Gupta, Usha. "हिंदी के कृष्ण भक्ति कालीन साहित्य में संगीत.".

Shinde, Pradip Manik. डॉ. कुँअर बेचैन के हिंदी गजल साहित्य का अनुशीलता. Diss. Tilak Maharashtra Vidyapeeth, 2020.

Vyāsa, Madanalāla. Hindusthani Sangit Mein Tansen Ka Sthan. Vani Prakashan, 1996.

आभा श्री, and प्रो. संध्या रानी शाक्य. "हिंदी सिनेमा में तंत्रवाद्यों का योगदान." Naveen International Journal of Multidisciplinary Sciences (NIJMS) 1.2 (2024): 42-45.

नितिन कौशिक. "भारतीय संगीत साहित्य में लौकिक और अलौकिक विचार." अमृत काल (Amrit Kaal), ISSN: 3048-5118 1.1 (2023): 27-30.

प्रोमिला. "कैलाशचन्द्र शर्मा के साहित्य, संगीत एवं रंगयात्रा में लोकजीवन एवं लोक समस्या." Innovative Research Thoughts 10.1 (2024): 16-21.